PMYV

शारदीय नवरात्रि 11 अक्टूबर से 19 अक्टूबर

दशमहाविद्या शक्ति आत्मसात दीक्षा

जीवन के सतत पथ को संचालित करने के लिये प्रत्येक गृहस्थ साधक दस महाविद्याओं (महाकाली, भगवती तारा, षोडशी त्रिपुर सुन्दरी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, त्रिपुर भैरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी, कमला) की शक्तियों से परिपूर्ण होना ही चाहता है। तंत्र शास्त्र में वर्णित यह श्लोक अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है -

'एता दशमहाविद्याः सिद्धविद्याः प्रकीर्तिताः।'

अर्थात्, "ये दस महाविद्यायें ही सिद्धविद्यायें (सिद्धियां प्रदान करने वाली विद्याएं) कहलाती हैं।"

मनुष्य को मातृत्व की गहरी और मूलभूत आवश्यकता होती है। मातृ शक्ति ही दिव्यता का मूल स्वरूप है। वह मूल शक्ति है जो चेतना, मन, पदार्थ, ऊर्जा, मौन, आनंद और साथ ही अशांति और हिंसा के रूप में समस्त जीवन में विद्यमान है। वह जीवंत ऊर्जा है जो सब कुछ सजीव, आकर्षक और अद्भुत बनाती है। हर चीज में अंतर्निहित है और साथ ही हर वस्तु से परे भी है।

अज्ञानतावश मानव जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि, दुःख, दोष से घिरे रहते हैं और भटकते रहते हैं। यह जो सदा से हमारी दीनता है, इसे दूर कर अपने स्वरूप को प्राप्त करना ही शक्ति है। इस शक्ति की जो महानिधि है, वह सभी शक्तियों की माता है, हम उसी को मातृ-शक्ति स्वरूप में 'आद्या शक्ति' कहते हैं। यह परमात्मा की वह शक्ति है, जिसने यह सृष्टि रची, वही शक्ति इसे धारण करती है तथा समेट भी लेती है। परमात्मा और हमारे बीच वही शक्ति है। सारा जगत् यह स्वीकार करता है कि महाशक्ति ही इस सम्पूर्ण जगत को चला रही है, किसी ऐसे आदि शक्ति का वर्चस्व इस सम्पूर्ण सृष्टि पर है, जो सभी क्रियाओं की जननी है।

तंत्र में देवी को 'बिंदु' कहा जाता है, जो गुप्त, सूक्ष्म और अत्यंत संवेदनशीलता का प्रतीक है। दस महाविद्यायें ज्ञान, खोज और समर्पण एवं प्रयास से प्राप्त होने वाले सभी स्रोतों का प्रतिनिधित्व करती हैं। दैविक शक्तियां भी उन्हीं को सहयोग प्रदान कर पाती हैं, जो स्वयं में दृढ़ निश्चयी हों तथा स्वयं पर और अपने कार्यों पर पूर्ण विश्वास रखते हों। ऐसे ही व्यक्तियों को साधक कहा गया है और साधक अपने जीवन में जो इच्छा, जो कामना करता है वह फलीभूत होती ही है। वह सदैव ऐसे अवसरों की ताक में रहता है, जब वह साधनायें सम्पन्न कर अपने भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के जीवन को पूर्णता प्रदान कर सके।

दस महाविद्यायें समय और मृत्यु की देवी हैं। वह अहंकार, अज्ञान और शत्रुओं का नाश, ज्ञान और मार्गदर्शन प्रदान करने में समर्थ हैं। सृजन और निर्माण का प्रतीक हैं। साथ ही भौतिक सुख प्रदान करने वाली सौंदर्य और ऐश्वर्य की देवी भी मानी जाती है। वह अपने प्रत्येक साधक का पालन-पोषण और सुरक्षा का कार्य करती ही हैं। रोग, कष्ट, भय, दरिद्रता, शत्रु, तंत्र प्रयोग व बाधायें ही असफलता का मूल कारण होती हैं। अतः सायुज्य स्वरुप में दस महाविद्या की शक्तियों को आत्मसात करने से उक्त क्षय रुपी कुस्थितियों का नाश तथा सुस्थितियों की वृद्धि होती है। दशमहाविद्या शक्ति आत्मसात दीक्षा न्यौ. 1500 (प्रति चरण)

दीक्षा हेतु नूतन फोटो व न्यौ. राशि कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर 7568939648

न्यौ. राशि NIDHI SHRIMALI SBI UIT Branch Jodhpur A/c No.:20287318460

Branch Code: 006590 MICR Code: 342002010 IFSC: SBINN0006490

आश्रम:कैलाश नारायण धाम E1077 सरस्वती विहार दिल्ली-34 011-45058768 9950980966

सद्गुरूदेव जी के साधनात्मक कार्यक्रम GurudevKailash YouTube KAILASH SIDDHASHRAM पर देखे।